शिशुलालनम्

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» पाठ परिचय और पृष्ठभूमि

प्रश्न 1 (आसान). इस पाठ का मुख्य भाव क्या है?
उत्तर – शिशुवात्सल्य।

प्रश्न 2 (आसान). कुंदमाला नाटक किसने लिखा है?
उत्तर – आचार्य दिङ्नाग।

प्रश्न 3 (मध्यम). 'शिशुवात्सल्य' का क्या अर्थ है?
उत्तर – बच्चों के प्रति प्रेम का भाव।

प्रश्न 4 (कठिन). राजा राम के कौन से पुत्रों का उल्लेख इस पाठ के संदर्भ में किया गया है?
उत्तर – लव और कुश।

» लव-कुश का राम दरबार में आगमन

प्रश्न 5 (आसान). लव-कुश किसके मार्गदर्शन में दरबार में आए?
उत्तर – विदूषक के।

प्रश्न 6 (आसान). दरबार में आकर लव-कुश ने सबसे पहले क्या किया?
उत्तर – राम को प्रणाम किया।

प्रश्न 7 (मध्यम). इस अंश में विदूषक की क्या भूमिका थी?
उत्तर – विदूषक ने लव-कुश को राम के पास तक जाने का रास्ता दिखाया और उनका मार्गदर्शन किया।

प्रश्न 8 (कठिन). लव-कुश के आगमन के समय राम कहाँ विराजमान थे?
उत्तर – राम सिंहासन पर विराजमान थे।

» राम का वात्सल्य और आलिंगन

प्रश्न 9 (आसान). लव-कुश को देखकर राम को कैसा अनुभव हुआ?
उत्तर – प्रसन्नता

प्रश्न 10 (आसान). राम ने लव-कुश के स्पर्श को कैसा बताया?
उत्तर – हृदयग्राही

प्रश्न 11 (मध्यम). राम ने लव-कुश को केवल कुशल प्रश्न के बजाय और क्या किया?
उत्तर – उन्होंने अतिथि के योग्य आलिंगन दिया।

प्रश्न 12 (कठिन). इस प्रसंग में राम के किस भाव का प्रदर्शन होता है?
उत्तर – राम के वात्सल्य और स्नेह का प्रदर्शन होता है।

» सिंहासन पर बैठने का आग्रह और विनय

प्रश्न 13 (आसान). लव-कुश ने सिंहासन पर बैठने से मना क्यों किया?
उत्तर – उन्होंने इसे राजधर्म के विरुद्ध माना।

प्रश्न 14 (आसान). 'सव्यवधानं' का क्या अर्थ है?
उत्तर – बीच में कोई चीज़ रखकर या रुकावट सहित।

प्रश्न 15 (मध्यम). राम ने लव-कुश को बैठने के लिए क्या उदाहरण दिया?
उत्तर – उन्होंने कहा कि जैसे चांद छोटा होने पर भी शिवजी के माथे पर शोभा देता है, वैसे ही बच्चे भी लालनीय होते हैं।

प्रश्न 16 (कठिन). इस प्रसंग में राम के किस गुण का पता चलता है?
उत्तर – राम की दयालुता, स्नेही स्वभाव, समझदारी और बच्चों के प्रति उनका अगाध प्रेम, साथ ही धर्म का सम्मान करने का गुण।

» शिशुओं की लालनशीलता का महत्व

प्रश्न 17 (आसान). शिशु किसकी वजह से लालनीय होता है?
उत्तर – अपनी उम्र (बालपन) की वजह से।

प्रश्न 18 (आसान). कौन शिवजी के मस्तक पर शोभा पाता है?
उत्तर – हिमकर (चंद्रमा)।

प्रश्न 19 (मध्यम). इस श्लोक के अनुसार क्या गुण होने पर भी शिशु लालनीय होते हैं?
उत्तर – अत्यधिक गुणवान होने पर भी शिशु लालनीय होते हैं।

प्रश्न 20 (कठिन). राम ने इस श्लोक से क्या संदेश दिया?
उत्तर – राम ने संदेश दिया कि छोटे बच्चे अपनी उम्र के कारण हमेशा स्नेह और दुलार के योग्य होते हैं, चाहे वे कितने भी महान या गुणवान हों।

» वंश परिचय और समानता का रहस्य

प्रश्न 21 (आसान). लव-कुश किसके सौंदर्य से राम को मोहित कर देते हैं?
उत्तर – लव-कुश अपने रूप-लावण्य (सौंदर्य) से राम को मोहित कर देते हैं।

प्रश्न 22 (आसान). लव-कुश ने अपने पितामह का नाम क्या बताया?
उत्तर – लव-कुश ने अपने पितामह का नाम भगवान सूर्य बताया।

प्रश्न 23 (मध्यम). राम को लव-कुश से मिलकर कैसा अनुभव हुआ, जिससे उन्होंने उनके वंश के बारे में पूछा?
उत्तर – राम को लव-कुश से मिलकर उनके अद्भुत रूप और अपने आप से एक अजीब सी समानता महसूस हुई, जिससे उनके मन में कौतूहल जागा और उन्होंने उनके वंश के बारे में पूछा।

प्रश्न 24 (कठिन). वंश परिचय और समानता का रहस्य क्या दर्शाता है?
उत्तर – यह रहस्य दर्शाता है कि कैसे नियति कभी-कभी लोगों को इस तरह मिलाती है कि उन्हें अपनी जड़ों और संबंधों का अचानक पता चलता है, जैसे राम को अपने पुत्रों से मिलकर हुआ।

» लव-कुश की पहचान: सोदर्यौ यमलौ

प्रश्न 25 (आसान). लव ने विदूषक के प्रश्न का क्या उत्तर दिया था?
उत्तर – लव ने उत्तर दिया, 'भ्रातरावावां सोदर्यौ'।

प्रश्न 26 (आसान). राम को लव और कुश को देखकर क्या लगा था?
उत्तर – राम को उनकी शारीरिक बनावट समान लगी और उम्र में कोई अंतर नहीं दिखा।

प्रश्न 27 (मध्यम). 'सोदर्यौ यमलौ' का हिंदी में क्या अर्थ है?
उत्तर – 'सोदर्यौ यमलौ' का हिंदी में अर्थ है 'सगे जुड़वां भाई'।

प्रश्न 28 (कठिन). राम को लव-कुश के जुड़वां होने की बात से क्या समझ आया?
उत्तर – राम को लव-कुश के जुड़वां होने की बात से उनकी रूप-रंग और उम्र में समानता का रहस्य समझ आया, जिससे उन्हें गहरा जुड़ाव महसूस हुआ।

» लव-कुश का नामकरण और शिष्टाचार

प्रश्न 29 (आसान). सबसे पहले अपना नाम किसने बताया?
उत्तर – लव ने।

प्रश्न 30 (आसान). राम जी ने उनके व्यवहार को क्या कहा?
उत्तर – उदात्तरम्यः समुदाचारः (बहुत ही उत्तम और रमणीय शिष्टाचार)।

प्रश्न 31 (मध्यम). लव ने कुश का परिचय कैसे दिया?
उत्तर – कुश की ओर इशारा करते हुए।

» गुरु वाल्मीकि और उपनयनोपदेश

प्रश्न 32 (आसान). लव और कुश ने किसे अपना गुरु बताया?
उत्तर – भगवान वाल्मीकि को।

प्रश्न 33 (आसान). राम जी के मन में गुरु के संबंध को लेकर क्या प्रश्न था?
उत्तर – राम जी जानना चाहते थे कि वाल्मीकि जी और लव-कुश का आपस में क्या संबंध है।

प्रश्न 34 (मध्यम). शब्द 'उपनयनोपदेशेन' का क्या अर्थ है?
उत्तर – 'उपनयनोपदेशेन' का अर्थ है उपनयन संस्कार की दीक्षा या शिक्षा। यह वह संस्कार है जिससे औपचारिक रूप से विद्या का आरंभ होता है।

प्रश्न 35 (कठिन). प्राचीन काल में उपनयन संस्कार का क्या महत्व था?
उत्तर – प्राचीन काल में उपनयन संस्कार बच्चे के शैक्षिक और आध्यात्मिक जीवन की औपचारिक शुरुआत थी। इसके बाद ही बच्चा गुरु के सान्निध्य में गुरुकुल में विद्या ग्रहण करता था। यह सिर्फ पढ़ाई नहीं, बल्कि जीवन जीने के मूल्यों और धर्म की शिक्षा की भी शुरुआत थी।

» पिता के नाम का रहस्य और 'निरनुक्रोशः'

प्रश्न 36 (आसान). राम लव और कुश से किसका नाम जानना चाहते थे?
उत्तर – उनके पिता का।

प्रश्न 37 (आसान). लव को अपने पिता का नाम पता था या नहीं?
उत्तर – नहीं।

प्रश्न 38 (मध्यम). 'निरनुक्रोशः' शब्द का क्या अर्थ है?
उत्तर – निर्दयी या जिसमें करुणा न हो।

प्रश्न 39 (कठिन). माँ लव और कुश को 'निरनुक्रोशस्य पुत्रौ' कहकर कब डांटती थीं?
उत्तर – जब वे कोई शरारत करते थे।

» राम का आत्मग्लानि और सीता का स्मरण

प्रश्न 40 (आसान). लव और कुश अपनी माँ को किस नाम से बुलाते थे, जिससे राम को आत्मग्लानि हुई?
उत्तर – निरनुक्रोशः

प्रश्न 41 (आसान). 'धिग् मामेवंभूतम्!' यह वाक्य किसने कहा?
उत्तर – राम ने

प्रश्न 42 (मध्यम). सीता अपने बच्चों को किस कारण से डांटती थीं?
उत्तर – क्योंकि बच्चे अपने पिता का नाम नहीं जानते थे और सीता को राम के प्रति क्रोध था।

प्रश्न 43 (कठिन). राम को आत्मग्लानि होने के पीछे सीता की कौन-सी स्थिति प्रमुख कारण थी?
उत्तर – सीता का तपस्विनी के रूप में जीवन बिताना और राम द्वारा किए गए त्याग के कारण बच्चों को पिता के नाम से अनभिज्ञ रहना।

» लव-कुश की माता का नाम

प्रश्न 44 (आसान). तपोवन के निवासी लव-कुश की माता को किस नाम से पुकारते थे?
उत्तर – देवी

प्रश्न 45 (आसान). लव-कुश की माता को 'वधू' नाम किसने दिया था?
उत्तर – भगवान वाल्मीकि

प्रश्न 46 (मध्यम). लव ने अपनी माता के कितने नाम बताए?
उत्तर – दो नाम

प्रश्न 47 (कठिन). राम ने सीधे लव-कुश की माता का नाम क्यों नहीं पूछा?
उत्तर – क्योंकि तपोवन में किसी स्त्री के बारे में सीधे पूछना उचित नहीं माना जाता था, खासकर एक राजा के लिए।

» रामायणगान और मुनि के आदेश का सम्मान

प्रश्न 48 (आसान). नेपथ्य से क्या सूचना मिली?
उत्तर – नेपथ्य से रामायणगान के लिए लव-कुश को बुलाने की सूचना मिली।

प्रश्न 49 (आसान). राम ने किसके आदेश का सम्मान किया?
उत्तर – राम ने मुनि के आदेश का सम्मान किया।

प्रश्न 50 (मध्यम). राम रामायणगान को क्या मानते हैं?
उत्तर – राम रामायणगान को मनुष्यों के लिए सरस्वती का एक अद्वितीय अवतार मानते हैं, जो धरती पर पहली बार अवतरित हुआ है।

प्रश्न 51 (कठिन). रामायणगान सुनने के लिए राम ने क्या निर्देश दिए?
उत्तर – राम ने सभी सभासदों को बुलाने और अपने मित्र लक्ष्मण को भी बुलाने के निर्देश दिए ताकि वे सब मिलकर यह पवित्र काव्य सुन सकें।

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. पाठ 'शिशुलालनम्' किस नाटक से लिया गया है और इसके लेखक कौन हैं?

› पाठ का परिचय याद करो।
› यह किस प्रसिद्ध संस्कृत नाटक का अंश है, पहचानो।
› नाटक के रचयिता का नाम याद करो।

उत्तर – पाठ 'शिशुलालनम्' 'कुंदमाला' नामक नाटक से लिया गया है और इसके लेखक आचार्य दिङ्नाग हैं।

उदाहरण 2. पाठ के अनुसार, लव और कुश राम के पास कैसे पहुंचे?

› पहला कदम: हमें पाठ के शुरुआत में देखना होगा कि उनके प्रवेश के समय कौन उनके साथ था।

› दूसरा कदम: पाठ में स्पष्ट बताया गया है कि 'विदूषवेफनोपदिश्यमानमार्गौ तापसौ वुफशलवौ' - यानी विदूषक द्वारा रास्ता दिखाए जाते हुए तपस्वी लव और कुश आए।

› तीसरा कदम: वे सीधे राम के पास नहीं गए, बल्कि विदूषक ने उन्हें राम के सिंहासन तक पहुंचाया।

उत्तर – लव और कुश विदूषक के मार्गदर्शन में, रास्ता दिखाए जाते हुए राम के सिंहासन के पास पहुंचे।

उदाहरण 3. राम ने लव-कुश को देखकर क्या प्रतिक्रिया दी और उन्होंने उनके प्रति अपना स्नेह कैसे व्यक्त किया?

› पहला, राम ने लव-कुश को देखते ही बहुत प्रसन्नता अनुभव की।

› दूसरा, उन्होंने केवल सामान्य कुशल-प्रश्न नहीं पूछा, बल्कि उन्हें अतिथि के समान समझते हुए, बड़े आत्मीय भाव से गले लगा लिया।

› तीसरा, गले लगाने के बाद, राम ने उनके स्पर्श को 'अहो हृदयग्राही स्पर्शः' कहकर हृदय को छू लेने वाला बताया।

› यह राम के वात्सल्यपूर्ण स्वभाव और उन बच्चों के प्रति उनके गहरे स्नेह को दर्शाता है।

उत्तर – राम ने लव-कुश को देखकर अत्यंत प्रसन्नता व्यक्त की और औपचारिक प्रश्न के बजाय, अतिथि के योग्य, स्नेहपूर्ण आलिंगन दिया। उन्होंने उनके स्पर्श को 'हृदयग्राही' बताया, जो उनके वात्सल्य को दर्शाता है।

उदाहरण 4. राम ने लव-कुश को सिंहासन पर बैठने के लिए क्या तर्क दिया?

› पहले राम ने सीधे सिंहासन पर बैठने को कहा।

› लव-कुश ने इसे राजधर्म के विरुद्ध बताया।

› तब राम ने कहा कि 'सव्यवधानं' (यानी बीच में कोई रुकावट या चीज़ रखकर) बैठना राजधर्म का उल्लंघन नहीं है।

› उन्होंने यह भी समझाया कि बच्चे लालनीय (प्यार करने योग्य) होते हैं, चाहे वे उम्र में छोटे ही क्यों न हों।

उत्तर – राम ने लव-कुश को 'सव्यवधानं' (यानी बीच में कोई रुकावट या वस्तु रखकर) सिंहासन पर बैठने का तर्क दिया, यह कहते हुए कि ऐसा करना राजधर्म के विरुद्ध नहीं होगा, और बच्चे हमेशा प्रेम के पात्र होते हैं।

उदाहरण 5. राम ने लव-कुश को लालन-पालन के योग्य क्यों बताया?

› राम ने देखा कि लव-कुश कम उम्र के हैं।

› उन्होंने श्लोक में समझाया कि शिशु अपनी बालसुलभता के कारण ही प्यार के पात्र होते हैं।

› उदाहरण के तौर पर चंद्रमा का प्रयोग किया, जो छोटा होने पर भी शिवजी के मस्तक पर शोभा पाता है।

उत्तर – राम ने लव-कुश को उनकी कम उम्र और बालसुलभता के कारण लालन-पालन (स्नेह और दुलार) के योग्य बताया।

उदाहरण 6. राम को लव-कुश के वंश परिचय से अपनी किस समानता का बोध हुआ?

› राम ने लव-कुश के आकर्षक रूप को देखा और उनसे उनके वंश के बारे में पूछा।

› लव ने उत्तर दिया कि उनके पितामह भगवान सूर्य हैं।

› यह सुनकर राम को आश्चर्य हुआ क्योंकि वह स्वयं भी सूर्यवंशी थे।

› इससे राम को यह बोध हुआ कि लव-कुश का वंश भी उन्हीं के समान सूर्यवंश है, और इसी कारण वे उनसे इतने मिलते-जुलते हैं।

उत्तर – राम को लव-कुश के वंश से अपनी सूर्यवंशीय समानता का बोध हुआ।

उदाहरण 7. पाठ में लव और कुश ने अपनी पहचान कैसे बताई?

› सबसे पहले, विदूषक के प्रश्न पर लव ने बताया कि वे दोनों 'भ्रातरावावां सोदर्यौ' हैं, जिसका अर्थ है 'हम दोनों सगे भाई हैं'।

› इसके बाद, राम ने उनकी शारीरिक बनावट में समानता और उम्र में कोई अंतर न देखकर आश्चर्य व्यक्त किया।

› तब लव ने इस आश्चर्य का कारण बताते हुए कहा, 'आवां यमलौ', जिसका अर्थ है 'हम दोनों जुड़वां हैं'।

उत्तर – लव और कुश ने अपनी पहचान 'सगे भाई' (सोदर्यौ) और 'जुड़वां' (यमलौ) बताकर स्पष्ट की।

उदाहरण 8. पाठ के आधार पर बताएं कि लव और कुश ने राम जी को अपना परिचय कैसे दिया?

› राम जी के पूछने पर, सबसे पहले लव ने अपना नाम बताया।

› लव ने कुश की ओर इशारा करते हुए उनके बारे में बताया।

› फिर कुश ने भी अपना नाम 'कुश' बताया।

उत्तर – लव ने 'मैं लव हूँ' और कुश ने 'मैं कुश हूँ' कहकर अपना परिचय दिया, और यह शिष्टाचार राम जी को बहुत पसंद आया।

उदाहरण 9. लव और कुश के गुरु कौन थे और किस संबंध से?

› प्रश्न पूछता है कि लव और कुश के गुरु कौन थे। पाठ के अनुसार, लव ने स्वयं बताया कि उनके गुरु भगवान वाल्मीकि थे।

› दूसरा भाग पूछता है कि किस संबंध से वे उनके गुरु थे। लव ने बताया कि यह संबंध 'उपनयनोपदेशेन' का था।

› इस शब्द का अर्थ है उपनयन संस्कार की दीक्षा, जो गुरु अपने शिष्य को देते हैं।

उत्तर – लव और कुश के गुरु भगवान वाल्मीकि थे। वे 'उपनयनोपदेशेन' (उपनयन संस्कार की दीक्षा) के संबंध से उनके गुरु थे।

उदाहरण 10. राम के 'पिता का नाम जानने की इच्छा' और कुश के 'निरनुक्रोशः' बताने के पीछे के संवाद का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

› पहला चरण: राम लव और कुश से उनके पिता का नाम पूछते हैं, जो एक स्वाभाविक जिज्ञासा है।

› दूसरा चरण: लव कहता है कि उन्हें नाम नहीं पता, और तपोवन में कोई उनका नाम नहीं लेता। यह एक रहस्यमयी स्थिति पैदा करता है।

› तीसरा चरण: कुश बताता है कि उनकी माँ उन्हें 'निरनुक्रोशः' (निर्दयी) कहकर बुलाती है जब वे शरारत करते हैं।

› चौथा चरण: 'निरनुक्रोशः' शब्द का अर्थ है 'निर्दयी'। माँ इस विशेषण का उपयोग उनके पिता के संदर्भ में करती है, जिससे राम को यह सोचने पर मजबूर होना पड़ता है कि उनके पिता के साथ क्या हुआ होगा या वे कौन होंगे।

उत्तर – इस संवाद से यह स्पष्ट होता है कि लव और कुश के पिता का नाम गुप्त रखा गया है, और उनकी माँ अपने बच्चों को उनके पिता के 'निर्दयी' स्वभाव से जोड़कर डांटती हैं, जो राम के मन में गहरा विचार उत्पन्न करता है।

उदाहरण 11. पाठ के आधार पर स्पष्ट करें कि राम को 'आत्मग्लानि' क्यों हुई?

› पहला कदम: राम ने लव और कुश से उनके पिता का नाम पूछा।

› दूसरा कदम: लव ने बताया कि उनकी माँ उन्हें 'निरनुक्रोशः' (निर्दयी) कहकर बुलाती हैं।

› तीसरा कदम: यह सुनकर राम को याद आया कि उन्होंने सीता का त्याग किया था, जिसकी वजह से सीता को तपस्विनी बनकर रहना पड़ा।

› चौथा कदम: राम को यह भी अहसास हुआ कि उन्हीं के कारण सीता को अपने बच्चों को गुस्से भरे शब्दों में डांटना पड़ा, क्योंकि उनके बच्चे अपने पिता के बारे में कुछ नहीं जानते थे।

› पाँचवाँ कदम: इन सब बातों से राम को अपने किए पर गहरा पछतावा हुआ, यही उनकी 'आत्मग्लानि' थी।

उत्तर – राम को अपने किए गए अपराध (सीता का त्याग) और उसके परिणामस्वरूप सीता तथा उनके बच्चों को हुई पीड़ा का अहसास होने पर आत्मग्लानि हुई।

उदाहरण 12. लव-कुश की माता के दो नाम कौन-कौन से थे, और उन्हें यह नाम किसने दिए?

› पहला नाम: 'देवी'

› यह नाम तपोवन के निवासी उन्हें सम्मान से बुलाते थे।

› दूसरा नाम: 'वधू'

› यह नाम भगवान वाल्मीकि ने दिया था, जो लव-कुश के गुरु थे और उन्हें अपनी बहू के समान मानते थे।

उत्तर – लव-कुश की माता के दो नाम थे: 'देवी' (तपोवनवासियों द्वारा) और 'वधू' (भगवान वाल्मीकि द्वारा)।

उदाहरण 13. राम ने रामायणगान को क्या कहकर सम्मानित किया और इसे सुनने के लिए क्या व्यवस्था की?

› पहला कदम, राम ने रामायण को 'अपूर्वम् मानवानां सरस्वत्यवतारः' यानी मनुष्यों के लिए सरस्वती का अद्वितीय अवतार बताया।

› दूसरा कदम, उन्होंने इस काव्य को 'प्रथममवतीर्णो वसुमतीम्' यानी धरती पर पहली बार उतरा हुआ बताया।

› तीसरा कदम, उन्होंने कहा कि वे इसे 'सुहृज्जनसाधारणं श्रोतुमिच्छामि' यानी मित्रों के साथ सुनना चाहते हैं।

› चौथा कदम, उन्होंने सभी सभासदों को बुलाने और अपने मित्र लक्ष्मण को भी बुलाने का निर्देश दिया।

उत्तर – राम ने रामायणगान को सरस्वती का अद्वितीय अवतार कहकर सम्मानित किया और इसे सुनने के लिए सभी सभासदों तथा लक्ष्मण को बुलाने की व्यवस्था की।

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

• पाठ का स्रोत, लेखक और केंद्रीय भाव सीधे प्रश्न के रूप में अक्सर पूछे जाते हैं, इन्हें अच्छे से याद कर लेना।

• यह अंश नाटक की शुरुआत है और 'कः कम् प्रति कथयति' जैसे प्रश्न के लिए महत्वपूर्ण है।

• यह प्रसंग राम के चरित्र चित्रण के लिए महत्वपूर्ण है; वात्सल्य भाव को अच्छे से समझें और लिखें।

• यह प्रसंग अक्सर परीक्षा में राम के चरित्र-चित्रण या संस्कृत भावार्थ के लिए आता है। 'सव्यवधानं न चारित्रालोपाय' यह वाक्य विशेष रूप से महत्वपूर्ण है।

• यह श्लोक बहुत महत्वपूर्ण है, खासकर इसके 'भाव' और 'अन्वय' को अच्छे से समझना। परीक्षा में श्लोक का भावार्थ या यह किसका उदाहरण है, ऐसे प्रश्न आते हैं।

• यह भाग 'शिशुलालम्' पाठ के मुख्य बिंदुओं में से एक है। राम का लव-कुश से वंश के बारे में पूछना और लव का उत्तर याद रखना महत्वपूर्ण है, क्योंकि इस पर आधारित प्रश्न बोर्ड परीक्षा में आ सकते हैं।

• यह अंश पाठ के मुख्य संवादों में से एक है। लव और कुश द्वारा अपनी पहचान बताने वाले संस्कृत वाक्यों को याद रखना और उनका अर्थ समझना ज़रूरी है, क्योंकि इन पर सीधे प्रश्न पूछे जा सकते हैं।

• यह अंश बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। 'उदात्तरम्यः समुदाचारः' यह वाक्यांश अक्सर पूछा जाता है।

• यह 'उपनयनोपदेशेन' शब्द का अर्थ और उसका महत्व बोर्ड परीक्षा के लिए महत्वपूर्ण है। इसे ध्यान से समझें और लिखें।

• यह प्रसंग राम और लव-कुश के भावनात्मक जुड़ाव की शुरुआत है। 'निरनुक्रोशः' शब्द का अर्थ और उसके उपयोग का संदर्भ बोर्ड परीक्षा के लिए महत्वपूर्ण है।

• यह अंश राम के चारित्रिक विकास और उनकी संवेदनशीलता को दर्शाता है। इससे संबंधित प्रश्न अक्सर भाव स्पष्टीकरण या चरित्र-चित्रण के रूप में आते हैं, इसलिए राम की भावनाओं को अच्छे से समझ कर लिखना।

• यह प्रश्न 'किसने कौन सा नाम दिया' या 'नामों के पीछे का कारण' के रूप में आ सकता है, इसलिए इसे ध्यान से समझें।

• यह भाग राम के विनम्र स्वभाव और ज्ञान के प्रति उनके आदर को दर्शाता है, जो पात्र-चित्रण के प्रश्नों के लिए महत्वपूर्ण है।

एक नज़र में रिवीज़न

› पाठ 'शिशुलालनम्' - 'कुंदमाला' नाटक, लेखक दिङ्नाग, शिशुवात्सल्य मुख्य भाव।

› लव-कुश का विदूषक के मार्गदर्शन में राम दरबार में आगमन।

› राम ने लव-कुश को गले लगाया, स्पर्श 'हृदयग्राही' बताया।

› राम ने लव-कुश को 'सव्यवधानं' सिंहासन पर बैठने को कहा।

› शिशु आयु के कारण सदा लालनीय, भले ही गुणवान हों।

› राम को लव-कुश के सूर्यवंशीय होने से अपनी समानता का बोध हुआ।

› लव-कुश: सोदर्यौ (सगे) यमलौ (जुड़वां) भाई।

› लव-कुश ने शिष्टाचार से अपना नाम बताया; राम ने 'उदात्तरम्यः समुदाचारः' की प्रशंसा की।
› गुरु वाल्मीकि, उपनयनोपदेशेन से लव-कुश के गुरु।
› पिता का नाम रहस्य, माँ उन्हें 'निर्दयी' कहकर पुकारती है।
› राम को सीता के त्याग का गहरा पश्चाताप (आत्मग्लानि) हुआ।
› लव-कुश की माता के दो नाम: 'देवी' (तपोवन), 'वधू' (वाल्मीकि)।
› राम ने मुनि के आदेश का सम्मान किया; रामायणगान को सरस्वती का अवतार माना।